शब्द व पद

राम | एक | अच्छा | लड़का | है

राम एक अच्छा लड़का है।

शब्द की परिभाषा

- एक से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक वर्ण-समूह शब्द कहलाते हैं।

  जैसे -

  सोहन, खीर, मीरा, खेलता, शतरंज इत्यादि।

- दूसरे शब्दों में कहा जाता है कि -

  1. शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं।

  2. शब्द सार्थक वर्ण-समूह या अक्षर-समूह होते हैं।

  3. शब्द स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होते हैं। वर्णों का वही समूह शब्द कहलाता है, जिसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से होता है।

ध्यान रखिए

- जब आप एक से अधिक वर्णों को मिलाकर कोई शब्द बनाते हैं तो वो जरुरी नहीं कि शब्द कहा जाए वह एक सार्थक अर्थात अर्थपूर्ण शब्द होना चाहिए तभी उसे शब्द की परिभाषा दी जा सकती है।
- **उदाहरण के तौर पर देखिए -**

  क + ल + म = कलम
  क + म + ल = कमल
  ल + म + क = लमक
  ल + क + म = लकम

हमने यहाँ चार उदाहरण दिए है। इन मे से केवल पहले दो उदाहरणों को ही शब्द कहा जा सकता है। बाकि दो को नहीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'कलम' का अर्थ होता है 'लेखनी' और 'कमल' का अर्थ होता है 'विशेष प्रकार का फूल' ये दोनों शब्द किसी न किसी अर्थ को प्रकट करने वाले हैं अतः इन्हें शब्द की संज्ञा दी जा सकती है। परन्तु अन्य दो 'लकम' और 'लमक' किसी भी अर्थ को प्रकट नहीं करते, ये दोनों सार्थक वर्ण-समूह नहीं हैं अतः इन्हे शब्द नहीं कहा जा सकता।

क + ल + म = कलम ✓
क + म + ल = कमल ✓
ल + म + क = लमक ✗
ल + क + म = लकम ✗

यहाँ एक बात स्पष्ट हो जाती है कि केवल वर्णों के सार्थक समूह को ही शब्द की संज्ञा दी जा सकती है।

पद की परिभाषा

- जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' बन जाता है। इस प्रकार वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद'है। कारक, वचन, लिंग, पुरुष इत्यादि में बँधकर शब्द 'पद'बन जाता है।
- जैसे -
  सीता गाती है।
  ईश्वर रक्षा करे।

  यहाँ 'सीता, 'ईश्वर'आदि शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर 'पद'में परिवर्तित हो गए हैं।

- दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जब सार्थक वर्ण-समूह अर्थात अर्थपूर्ण शब्द का प्रयोग वाक्य में किया जाता है, तो उस शब्द को पद कहते हैं। अब यह केवल शब्द नहीं रह जाता है बल्कि यह शब्द वाक्य में लिंग, वचन, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण इत्यादि दर्शाता है।
- जैसे –

  राम आम खा रहा है।
- इस वाक्य में 'राम' और 'आम' शब्द का पद परिचय है 'संज्ञा', और 'खा रहा है' का पद परिचय है 'क्रिया'।

शब्द व पद में अंतर

शब्द	पद
1. शब्द वर्णों की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है।	1. वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'पद' कहलाता है।
2. शब्द का मात्र अर्थ परिचय होता है।	2. पद का व्याकरणिक परिचय होता है।
3. शब्द स्वतन्त्र होते हैं।	3. पद वाक्य में विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में बँध जाता है।
4. जैसे 'लड़का' एक शब्द है।	4. 'लड़का खेल रहा है।' यहाँ वाक्य में प्रयुक्त होने के कारण 'लड़का' शब्द न रहकर 'पद' बन गया है।

पद के भेद

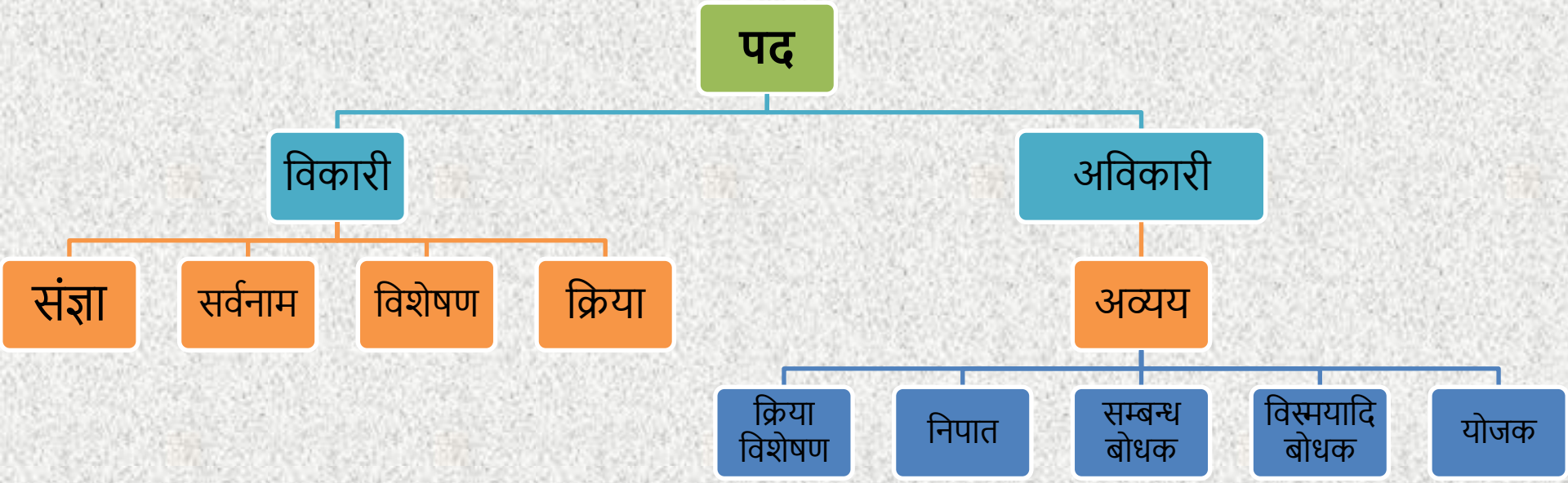
पद
विकारी
अविकारी
संज्ञा
सर्वनाम
विशेषण
क्रिया
अव्यय
क्रिया विशेषण
निपात
सम्बन्ध बोधक
विस्मयादि बोधक
योजक

संज्ञा

- 'संज्ञा' (सम्+ज्ञा) शब्द का अर्थ है ठीक ज्ञान कराने वाला। अतः "वह शब्द जो किसी स्थान, वस्तु, प्राणी, व्यक्ति, गुण, भाव आदि के नाम का ज्ञान कराता है, संज्ञा कहलाता है।"

  उदाहरणार्थ –
  - स्थान—भारत, दिल्ली, जयपुर, नगर, गाँव, गली, मोहल्ला।
  - वस्तुएँ—पंखा, पुस्तक, मेज, दूध, मिठाई।
  - प्राणी—गाय, चूहा, तितली, पक्षी, मछली, बिल्ली।
  - व्यक्ति—राम, श्याम, कृष्ण, महेश, सुरेश।
  - भाव—बचपन, बुढ़ापा, मिठास, सर्दी, सौन्दर्य, अपनत्व।

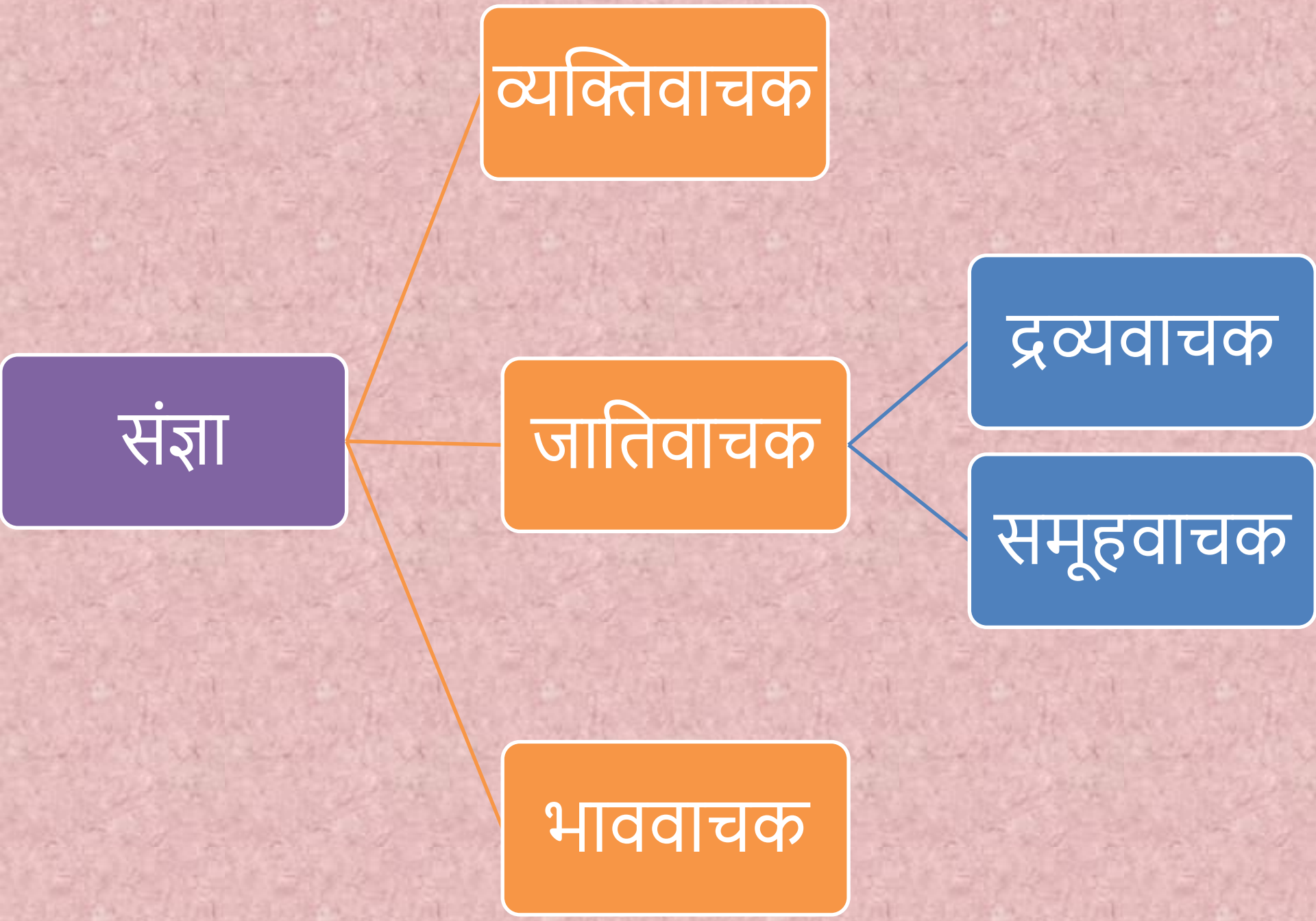
संज्ञा
व्यक्तिवाचक
जातिवाचक
द्रव्यवाचक
समूहवाचक
भाववाचक

सर्वनाम

- परिभाषा –
  संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
- सर्वनाम का अभिधार्थ है—सबका नाम। जो सबके नाम के स्थान पर आये, वे सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– मैँ, तुम, आप, यह, वह, हम, उसका, उसकी, वे, क्या, कुछ, कौन आदि।
-

सर्वनाम का प्रयोग

- वाक्य में संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। सर्वनाम भाषा को सहज, सरल, सुन्दर एवं संक्षिप्त बनाते हैं। सर्वनाम के अभाव में भाषा अटपटी लगती है।
- उदाहरणार्थ –

राम स्कूल गया है। स्कूल से आते ही राम राम का और मित्र का काम करेगा। फिर राम और मित्र खेलेँगे।

यह वाक्य कितना अटपटा, अनगढ़ और असुन्दर है। अब सर्वनामों से युक्त वाक्य देखिए–

राम स्कूल गया है। वहाँ से आते ही वह अपने मित्र के घर जायेगा। फिर दोनों अपना–अपना काम करेंगे। फिर दोनों खेलेंगे।

सर्वनाम के भेद

- पुरुषवाचक
  - उत्तम पुरुष
  - मध्यम पुरुष
  - अन्य पुरुष
- निश्चयवाचक
- अनिश्चयवाचक
- सम्बन्धवाचक
- प्रश्नवाचक
- निजवाचक

(1) पुरुषवाचक – मैं ,हम(उत्तम पु.), तुम, तू, आप (मध्यम पु.), वह यह,इस, उस(अन्य पु.)
(2) निश्चयवाचक – यह,इस (निकटवर्ती), वह,उस (दूरवर्ती)
(3) अनिश्चयवाचक – कोई , कुछ , कहीं
(4) सम्बन्धवाचक – जो ... सो (वह)
(5) प्रश्नवाचक – कौन, क्या,
(6) निजवाचक – अपने-आप (स्वयं, खुद)।

विशेषण

- परिभाषा –

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, रंग, आकार–प्रकार आदि) बताने वाले शब्दोंको विशेषण कहते हैं। जैसे– मोटा, पतला, आदि।

उदाहरणार्थ–

- **एक किलो** चीनी लाओ।
- **सफेद** गाय **कम** दूध देती है।
- बच्चा **होशियार** है।
- **कुछ** लोग सो रहे हैं।
- मेरी कक्षा में **बीस** विद्यार्थी हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में एक किलो, सफेद, कम, होशियार, कुछ, बीस क्रमशः चीनी, गाय, दूध, बच्चे, लोग तथा विद्यार्थी की विशेषता बता रहे हैं, अतः ये सभी विशेषण हैं।

विशेषण के भेद

- गुणवाचक
- संख्यावाचक
  - निश्चित संख्यावाचक
  - अनिश्चित संख्यावाचक
- परिमाणवाचक
  - निश्चित परिमाणवाचक
  - अनिश्चित परिमाणवाचक
- सार्वनामिक

क्रिया

- ♦ परिभाषा–

जिन शब्दों से किसी कर्म (कार्य) के होने या करने अथवा किसी प्रक्रिया में होने का बोध हो, उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। जैसे–

- राम खाना खाता है।
- रेखा खेल रही है।
- वह बम्बई गया।
- नदी बह रही थी।
- मोहिनी गाती है।
- पुस्तक मेज पर है।
- गर्मी हो रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खाता है', 'खेल रही है', 'गया', 'बह रही थी', 'गाती है', 'पर है', 'हो रही है' क्रिया बोधक शब्द हैं।

क्रिया के भेद

अर्थ के आधार पर

- सकर्मक क्रिया
- अकर्मक क्रिया

अन्य भेद

- प्रेरणार्थक क्रियाएँ
- कृदंत क्रिया
- आज्ञार्थक या विधि क्रिया

सकर्मक क्रिया

- जिस क्रिया के व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओ. में कर्म अवश्य होता है। जैसे–
  - मोहन ने खाना खाया।
  - सीता ने पत्र पढ़ा।

इन दोनों वाक्यों में 'खाया' और 'लिखा' शब्दों का फल मोहन और सीता पर न पड़कर 'खाना' और 'पत्र' पर पड़ रहा है। अतः ये दोनों सकर्मक क्रियाएँ हैं। अन्य उदाहरण–

अकर्मक क्रिया

- जिन क्रियाओं में कोई कर्म नहीं होता और उनके व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, वे 'अकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं। जैसे–
  - मोहन खेलता है।
  - बन्दर आया।

इन दोनों वाक्यों में 'खेलता है' और 'आया' क्रिया शब्दों का फल कर्त्ता मोहन और बन्दर पर पड़ रहा है, किसी कर्म पर नहीं। अतः ये दोनों अकर्मक क्रियाएँ हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ

जिस क्रिया से यह बोध होता है कि कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उस कार्य के करने की प्रेरणा देता है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे– मोहन, बरखा से पत्र लिखवाता है। यहाँ 'लिखवाता है' प्रेरणार्थक क्रिया है।

कृदंत क्रिया

जो क्रियाएँ शब्दोंके अन्त में शब्दांश जोड़कर बनायी जाती हैं, वे कृदन्त क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे– देखता, देखा, देखकर आदि।

आज्ञार्थक या विधि क्रिया

जिस क्रिया का प्रयोग आज्ञा, अनुमति, प्रार्थना आदि के बोध के लिए किया जाता है, तो वह आज्ञार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे–

अव्यय

- **परिभाषा–**

  जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, क्रिया,काल, कारक आदि के कारण कोई विकार पैदा नहींहै, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं।अर्थात् अव्यय अविकारी पद होते हैं| यहाँ विकार से तात्पर्य है - परिवर्तन

अव्यय के भेद

- क्रिया विशेषण
  - स्थानवाचक
  - कालवाचक
  - रीतिवाचक
  - परिमाणवाचक
- निपात
- सम्बन्ध बोधक
- विस्मयादि बोधक
- समुच्चयबोधक

क्रिया विशेषण के भेद

स्थानवाचक क्रिया विशेषण

- क्रिया की स्थान या दिशा सम्बन्धी विशेषता
- यहाँ, वहाँ, नीचे, इधर–उधर, आस–पास आगे-पीछे

कालवाचक क्रिया–विशेषण

- क्रिया के होने का समय या काल मालूम होता है
- सर्वदा, बहुधा, निरन्तर, प्रतिदिन, आज, कल, परसों

परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण

- क्रिया के परिमाण अर्थात् अधिकता–न्यूनता, नाप–तौल का बोध होता है
- थोड़ा, तनिक, पर्याप्त, बहुत, बिल्कुल

किया विशेषण के भेद

रीतिवाचक क्रिया–विशेषण

- क्रिया की रीति या विधि का पता चलता है अर्थात् क्रिया के होने का ढंग मालूम होता है
- धीरे–धीरे, मानो, यथाशक्ति, ज्यों, त्यों

स्वीकारात्मक क्रिया–विशेषण

- शब्दों से स्वीकृति का बोध होता है
- जी, अवश्य, अच्छा, बहुत अच्छा, जरूर

निषेधात्मक क्रिया–विशेषण

- जिन अव्यय शब्दों से क्रिया के निषेध का ज्ञान होता है,
- न, नहीं, मत

समुच्चयबोधक अव्यय

- जिन अव्यय शब्दों से दो शब्द, दो वाक्यांश, दो उपवाक्य, पदबन्ध या वाक्य जोड़े जाते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक या योजक अव्यय कहते हैं। जैसे– और, या, अथवा, परन्तु, वरना, इसलिए, एवं आदि।
  - वह निकम्मा है इसीलिए सब उसे दुत्कारते हैं।
  - यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य उत्तीर्ण होगे।

सम्बन्ध बोधक अव्यय

- जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आते हैं एवं उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों या पदों के साथ बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते हैं। जैसे– की ओर, की अपेक्षा, के तुल्य, के वास्ते, के निकट, पलटे, ऐसा, जैसे, लिए, मारे, करके आदि सम्बन्धवाचक अव्यय हैं।

  उदाहरण–
  - खुशी के मारे वह पागल हो गया।
  - बालक चाँद की ओर देख रहा था।

विस्मयादिबोधक अव्यय

- वे अव्यय शब्द जो बोलने वाले या लिखने वाले के विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि, खेद आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे– अहो, हे, छिः, वाह, अरे आदि।

निपात

वे सहायक पद जो वाक्यार्थ में नवीन अर्थ या चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं, निपात कहलाते हैं। जैसे– ही, तक, तो, भी, सा,मात्र , केवल , आदि निपात हैं।

निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य का अंग नहीं हैं। इनका कोई भी लिंग या वचन नहीं होता। निपात का कार्य शब्द–समूह को बल प्रदान करना है।

अधिन्यास

- प्रश्न 1. शब्द व पद की परिभाषा लिखिए|
- प्रश्न 2. पद के भेद का फ्लो चार्ट बनाइए|
- प्रश्न 3. पाँचों भेदों की परिभाषा लिखते हुए प्रत्येक के भेदों का फ्लो चार्ट भी बनाइए|
- निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों का पद भेद बताइए –

1. बालक चाँद की ओर देख रहा था।
2. मुझे घर जाना चाहिए ताकि मैंआराम कर सकूँ।
3. गुरुजी से नम्रता से बोलो।
4. कुछ तेज चलो।
5. राम और श्याम दोनोंएक ही कक्षा में पढ़ते हैं।
6. पिताजी ने हमें कुछ पैसे दिए।
7. बुरे लोगोंसे दूर ही रहना चाहिए।
8. आकार में रामायण से महाभारत वृहत्तर है।
9. तू अब तक कहाँ था?
10. मैंस्वयं आ जाऊँगा।